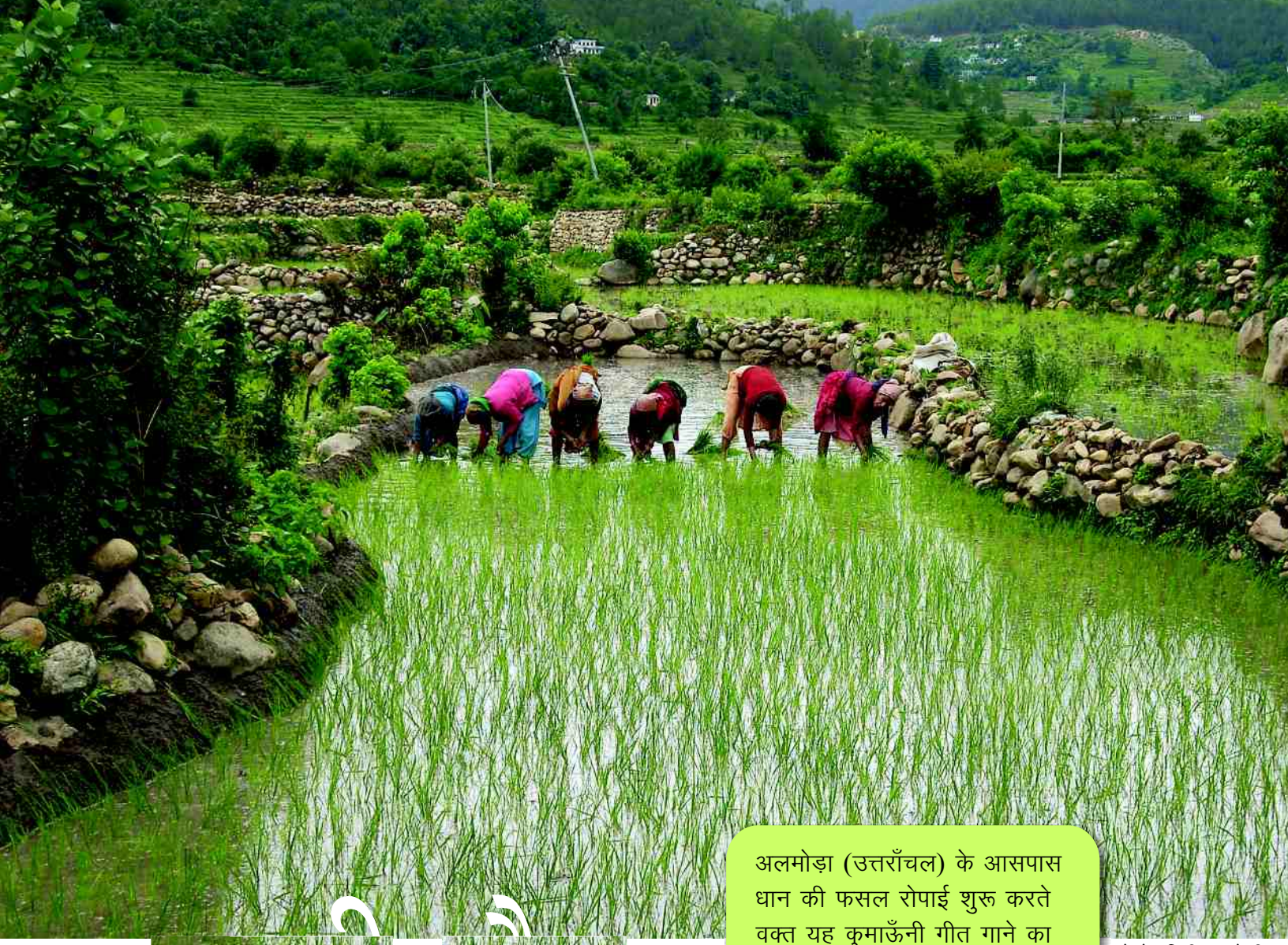

फोटोः विनीता जोशी

हुडकी बौल

अलमोड़ा (उत्तराँचल) के आसपास धान की फसल रोपाई शुरू करते वक्त यह कुमाऊँनी गीत गाने का रिवाज़ है। इसमें देवताओं की अराधना की जाती है। इसे हुडकी बौल कहते हैं। इसे गाते वक्त एक लोक वाद्ययंत्र हुडका बजाया जाता

प्रस्तुतिः विनीता जोशी

दै हो SS भूमि का भूम्याला देवा : भूमि का भूम्याला देवा हो SS
दै हो SS सुफल है जाया देवा सुफल है जाया देवा हो SS
दै हो SS थाती कै थत्याला देवा थाती कै थत्याला देवा हो SS
दै हो SS पंचनामा म्यारा देवा पंचनामा म्यारा देवा हो SS
देवा हो SS आ SS
देवा हो SS

झिरी झुमुका अहा! चाँदी खेतों माँझा रे ....
झिरी झुमुका अहा! रोपाई करला रे .....
झिरी झुमुका अहा! बार बीसी पुतांरी रे .....
झिरी झुमुका अहा! छः बीसी हलिया रे .....
झिरी झुमुका अहा! के भली रोपाई रे .....
झिरी झुमुका अहा! चाँदी खेतों मांझा रे .....

यानी

हे! भूमि के देवता प्रसन्न हो जाओ! हे!
हे! क्षेत्र देवता प्रसन्न हो जाओ!
हे! पँचदेवो प्रसन्न हो जाओ!
हे! मेरे देवता प्रसन्न हो जाओ! आओ! देवो आओ!
अहा! कितने सुन्दर चाँदी के (पानी से भरे हुए) खेत हैं जिन पर रोपाई करेंगे।
अहा! ये कितने लम्बे चौड़े खेत हैं।
अहा! इन पर कितनी अच्छी रोपाई हो रही है।
अहा! चाँदी के खेतों में झूमती हुई फसल